साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

जुलाई 2013 वर्ष 18, अंक 7

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कार्यक्रम : एक परिचय

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (नेशनल लिटरेसी मिशन–एन.एल.एम.) राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार द्वारा 1988 में चलाया गया कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य 15 से 35 वर्ष आयुवर्ग के लगभग 8 करोड़ वयस्कों को शिक्षित करना है। 'साक्षरता' के द्वारा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का उद्देश्य न केवल पढ़ना, लिखना और गणना करना सिखाना है बल्कि लोगों में यह जागरूकता भी लाना है कि वे वंचित क्यों हैं और उनके जीवन में सुधार कैसे हो।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना (5 मई, 1988) का उद्देश्य था निरक्षरों को कार्यात्मक साक्षरता प्रदान कर देश से वयस्क निरक्षरता का उन्मूलन करना। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन कार्यरत एक स्वतंत्र भाग, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण के दिशानिर्देश में काम करता है।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन अपने उद्देश्यों की पूर्ति दो कार्यक्रमों–संपूर्ण साक्षरता एवं उत्तर साक्षरता–के द्वारा करता रहा, किंतु 30 सितंबर, 1999 को राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कार्यक्रम में परिवर्तन करके दोनों कार्यक्रमों को एक ही परियोजना के अधीन कर दिया गया।

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन ने साक्षरता अभियान की सफल शुरुआत केरल के कोट्टयम शहर से की, जिसके बाद एर्नाकुलम जिले में भी अभियान को सफलता मिली। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के द्वारा संपूर्ण साक्षरता अभियान की शुरुआत के लिए इसे

पृ. सं. 2 कॉलम 1 पर जारी ...

पर्यावरण सँभालो भैया
आबादी को टालो भैया
फिर से चिड़िया तोता मैना
साक्षर बनकर पालो भैया।

हर्ष कुमार 'हर्ष', पटियाला, पंजाब

नन्हे मेघों की
खुल गई शालाएँ
आषाढ़ मास।

अशोक आनन, मक्सी, म.प्र.

संदर्भ : विश्व जनसंख्या दिवस, 11 जुलाई

विश्व-जनसंख्या, भारत तथा साक्षरता

सन् 1987 में जब विश्व की जनसंख्या 5 अरब हो गई तो संयुक्त राष्ट्र ने जनसंख्या को लेकर वैश्विक जागरूकता के बारे में विचार किया। उसी वर्ष, संयुक्त राष्ट्र ने 11 जुलाई का दिन विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में तय किया। तब से वैश्विक जनसंख्या में लगातार बढ़ोतरी होती रही। 1999 में जनसंख्या 6 अरब को पार कर गया, जबकि 2011 में 7 अरब। विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या 5 देशों में निवास करती है। जनसंख्या सहित इन देशों के नाम हैं : चीन (1 अरब 34 करोड़), भारत (1 अरब 21 करोड़), अमेरिका (31 करोड़), इंडोनेशिया (23 करोड़) तथा ब्राजील (19 करोड़)।

विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5% भारत में निवास करता है। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार सन् 2030 तक भारत विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन सकता है। विदित हो कि स्वाधीनता के समय हमारे देश की जनसंख्या 33 करोड़ थी।

जनसंख्या में इतनी बढ़ोतरी के बावजूद अर्थव्यवस्था के

पृ. सं. 2 कॉलम 2 पर जारी ...

"जनसंख्या पर नियंत्रण किए बिना विकास को गति नहीं दी जा सकती और देश समृद्ध नहीं हो सकता।"

–जेआरडी टाटा (ज : 29 जुलाई, 1904)

पढ़ना आनंद की एक अनुभूति है। इसे अपनाइए, आदत बनाइए।

संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी, यूनेस्को द्वारा 1999 में प्रतिष्ठित 'यूनेस्को नोमा लिटरेसी प्राइज' भी प्रदान किया गया था।

वर्तमान में वयस्क शिक्षा **साक्षर भारत कार्यक्रम** के माध्यम से संचालित किया जा रहा है। विदित हो कि साक्षर भारत मिशन की शुरुआत 8 सितंबर, 2009 को की गई थी और सरकार ने 2015 तक 80 प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य निर्धारित किया है।

लघु कथा

पितृ-ऋण

एक दिन शाम की सैर के समय दीपक ने देखा, एक वयोवृद्ध व्यक्ति सड़क किनारे वृक्ष लगा रहा है। वह उसके पास ठहर गया और उसके क्रियाकलापों को देखने लगा। वृद्ध ने बड़ी तल्लीनता से मिट्टी खोदकर वृक्ष लगाया। उसमें खाद और पानी दिया। दीपक ने उसका ध्यान भंग करते हुए कहा, ''बाबा, एक बात बताएँगे?''

वृद्ध ने उसकी ओर देखा, पूछा, ''हाँ बेटा, क्या जानना चाहते हो?''

दीपक ने पूछा, ''बाबा, आप जानते हैं कि इस वृक्ष को बड़ा होने और फल-फूल देने में बहुत वर्ष लगेंगे। यह तय है कि आप तब तक जीवित नहीं रह पाएँगे। फिर आप यह व्यर्थ का परिश्रम क्यों कर रहे हैं?''

वृद्ध ने मुस्कराकर जवाब दिया, ''बेटा, मैं जानता हूँ कि इस वृक्ष के फल आने के लिए मैं जीवित नहीं रहूँगा। परंतु मैं यह सोचकर वृक्ष लगा रहा हूँ कि भविष्य में मेरे परिवार और समाज के लोगों को इसके मीठे फल खाने को मिलेंगे। वे इसके सुंदर फूल ले सकेंगे और इसकी शीतल छाया में विश्राम कर सकेंगे। मुझे याद है, जिस पेड़ से मैं अब तक फल-फूल लेता रहा हूँ, जिसकी शीतल छाया में विश्राम करता रहा हूँ, उसे मेरे पितृजनों ने ही लगाया था। अब वृक्ष लगाकर मैं अपना पितृ-ऋण अदा करने की कोशिश कर रहा हूँ। यह मेरा कर्तव्य है।''

यह सुनकर दीपक उस वृद्ध के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो गया। उसे उस वृद्ध की बातों से यह संदेश मिला कि जिस परिवार और समाज में पलकर हम बड़े हुए हैं उनके प्रति हमारे भी कर्तव्य हैं। उन कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करना चाहिए।

कमलचंद वर्मा, महू छावनी, म.प्र.

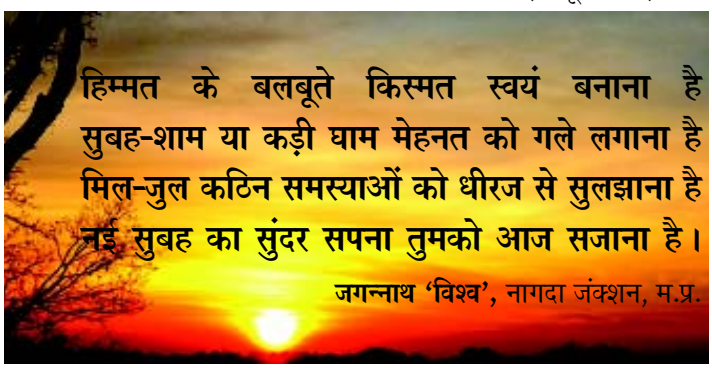

लिहाज से हमारी स्थिति में सुधार हुआ है–पिछले दो दशकों में भारत विश्व की तीसरी सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था बना है।

साक्षरता के क्षेत्र में भी हमने अच्छी प्रगति की है। वर्ष 2001 में जहाँ हमारी साक्षरता का प्रतिशत 65.38 था, वहीं 2011 में बढ़कर यह 74.04 हो गया। एक दशक में यह बढ़ोतरी 9% है। पुरुष साक्षरता 82.14% की तुलना में स्त्री साक्षरता भले ही 65.46% हो किंतु खास बात यह है कि स्त्री साक्षरता दर में पुरुष साक्षरता दर की तुलना में गुणात्मक बढ़ोतरी हुई है। देश के सकल साक्षरता दर में वृद्धि की दर साक्षर भारत योजना के लागू होने के बाद से बढ़ गई है।

मिसाल

एक ग्राम पंचायत ऐसा भी

देश में पंचायती राज की स्थापना हमारे देश के स्वप्नद्रष्टा और ईमानदार नेताओं की इच्छा और मंशा रही है। लोकतंत्र की पहली सीढ़ी ग्राम पंचायत को ही माना जाता है। लेकिन दुर्भाग्य से देश में विचार (अवधारणा) और व्यवहार के स्तर पर बड़ा अंतर रहा है। पंचायती राज की अवधारणा आज भी कागजों पर अधिक है, व्यवहार में कम। लेकिन बिहार से आई एक खबर सुकून देती है। खबर है कि बिहार के समस्तीपुर जिले के एक गाँव में पंच ही परमेश्वर है। यहाँ पिछले 26 वर्षों में एक भी मामला थाना अथवा कोर्ट-कचहरी नहीं पहुँचा है। इस गाँव में दलित-महादलित समुदाय बहुलता में है जबकि पढ़े-लिखों की संख्या अंगुलियों पर गिनने लायक। लेकिन यह गाँव आज इसलिए विशेष बन गया है कि यहाँ सभी तरह के विवाद गाँव में ही सुलटा लिये जाते हैं। ग्राम पंचायत में पिछले छह वर्षों में लगभग 500 मामलों का निपटारा किया गया। इस गाँव के लोगों ने जो मिसाल पेश की है वह सारे देश के लिए अनुकरणीय है।

(**दुर्गा प्रसाद शर्मा,** *बुलंदशहर* द्वारा भेजी खबर की संपादकीय प्रस्तुति)

संदर्भ : पुण्यतिथि, 1 जुलाई (1962)

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन : हिंदी के 'सेनानी'

"स्वाधीनता और स्वभाषा का घना संबंध है। बिना अपनी भाषा की नींव दृढ़ किए स्वतंत्रता की नींव दृढ़ नहीं हो सकती। जो लोग इस तत्त्व को समझते हैं, वे मर-मिटने तक अपनी भाषा नहीं छोड़ते। जिंदा देशों में यही होता है। मुर्दा और पराधीन देशों की बात मैं नहीं कहता, उन अभागे देशों में तो ठीक इसके विपरीत ही दृश्य देखा जा सकता है।"

हिंदी के अनन्य प्रेमी पुरुषोत्तम दास टंडन (संक्षेप में पी.डी. टंडन) के हिंदी के संबंध में स्पष्ट धारणा थी कि 'ऐसी भाषा हिंदी ही है, जो समूचे देश में सहज ही फैलाई जा सकती है।' दरअसल, किसी राजनेता ने हिंदी के लिए उतना कार्य नहीं किया जितना टंडन जी ने। उन्होंने ही 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' की नींव रखी थी। इलाहाबाद के जिस मुहल्ले में उनका जन्म हुआ था पं. मदनमोहन मालवीय तथा पं. बालकृष्ण भट्ट का निवास स्थान भी वही मुहल्ला था। उन्हें अपने छात्र जीवन में भट्ट जी के शिष्य होने का सुयोग मिला था। भट्ट जी 'हिंदी-प्रदीप' नामक पत्र निकालते थे। उनकी ही प्रेरणा से वे हिंदी-लेखन की ओर झुके। उन दिनों सरकारी तंत्र में हिंदी को उचित प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं थी। मालवीय जी के नेतृत्व में छिड़े हिंदी आंदोलन में टंडन जी उनके विशेष सहयोगी बने।

उन दिनों काशी में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हो चुकी थी। यहीं हिंदी साहित्य सम्मेलन की भी स्थापना 10 अक्तूबर, 1910 को हुई। सम्मेलन के गठन का उद्देश्य था हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाना। महात्मा गाँधी भी बाद में सम्मेलन के विशिष्ट अंग बने। 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' भी इसी सम्मेलन की देन थी। 'हिंदी विद्यापीठ' और 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' (वर्धा) भी टंडन जी की ही देन हैं। पं. राहुल सांकृत्यायन ने टंडन जी को हिंदी का 'प्रतीक' कहा था।

टंडन जी ने केंद्रीय सचिवालय में संसदीय हिंदी परिषद् का गठन करके हिंदी के अध्यापन की व्यवस्था करवाई थी। 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' इसी संसदीय हिंदी परिषद् की ओर से मनाया जाता है।

चमको, तो सूरज की तरह
चहको, तो चिड़िया की तरह
सारा गुलशन तुम्हारा है
महको, तो गुलाब की तरह।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

संदर्भ : जयंती स्मरण, 31 जुलाई

प्रेमचंद के साहित्य, समाज और राजनीति पर विचार

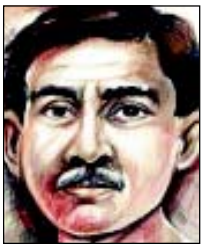

"ये चीजें (साहित्य, समाज और राजनीति) माला जैसी हैं। जिस भाषा का साहित्य अच्छा होगा, उसका समाज भी अच्छा होगा। समाज के अच्छा होने पर मजबूरन राजनीति भी अच्छी होगी। ये तीनों साथ-साथ चलने वाली चीजें हैं। इन तीनों का उद्देश्य ही जो एक है। साहित्य शेष दोनों की उत्पत्ति के लिए एक बीज का काम देता है। साहित्य और समाज और राजनीति का संबंध बिलकुल अटल है। ...साहित्य से लोगों को विकास मिलता है। साहित्य से आदमी की भावनाएँ अच्छी और बुरी होती हैं। ...साहित्य अपने काल का प्रतिबिंब होता है।"

पुण्यतिथि स्मरण : 15 जुलाई (1904)

अंतोन चेखव : महानतम कथाकार

पूरा नाम अंतोन पाव्लोविच चेखव। पेशे से डॉक्टर चेखव रूस के महान नाटककार और कथाकार थे। जन्म 1860 में। साहित्यिक इतिहास में चेखव आज तक के महानतम कथाकार माने जाते हैं। चेखव ने चिकित्सक और साहित्यकार के अपने दोनों रूपों की व्याख्या करते हुए कहा था—दवा मेरी कानूनी पत्नी है और साहित्य मेरी प्रेमिका। चेखव ने शुरू-शुरू में आर्थिक कारण से कहानियाँ लिखीं, पर ज्यों-ज्यों उनकी कलात्मक महत्वाकांक्षा बढ़ती गई वे नाटक की ओर मुड़ने लगे। उनके चारों नाटक बेहद प्रसिद्ध रहे। ये थे—*द सीगल, अंकल वान्या, थ्री सिस्टर्स* तथा *द चेरी ऑर्चार्ड*। चेखव ने कुल 201 कहानियाँ लिखीं। गरीबी और अभाव में बचपन गुजारने वाले लेखक चेखव महज 44 साल की उम्र में दुनिया छोड़ गए। चेखव की रचनाओं पर यूडोरा वेल्टी का कथन है—*चेखव को पढ़ना देवदूतों के संगीत सुनने के समान है।*

'यह जरूरी नहीं है कि हमारे प्रिय आदर्श, सपने और आशाएँ हमारे जीवन-काल में ही झलकते हों लेकिन यह महत्वपूर्ण बात नहीं है। यह ज्ञान कि अपने समय में आपने अपना कर्तव्य-पालन किया, आप अपने साथियों की आशाओं पर खरे उतरे, यही आपका महत्वपूर्ण पुरस्कार और महान उपलब्धि है।' **—नेलसन मंडेला**

शीना डनकन को लिखे एक पत्र से, 1 अप्रैल 1985 (जन्म दिन 18 जुलाई)

इंद्रधनुष

प्रति वर्ष 1 से 7 जुलाई तक भारत में वन महोत्सव सप्ताह मनाया जाता है। इस अवसर पर पूरे देश में पेड़ लगाए जाते हैं तथा लोगों में पेड़ के प्रति जागरूकता एवं अपनत्व पैदा किया जाता है।

तैरता हुआ पुस्तकालय!

'गूगल बुक्स फॉर ऑल' (जीबीए) द्वारा संचालित **एमवी लोगोस होप** एक ऐसा जहाज है जिसमें किताबें भरी पड़ी हैं। यह तैरता हुआ पुस्तकालय दुनिया भर की यात्राएँ करता है। इसमें 45 देशों के लगभग 400 स्वयंसेवक हमेशा मुस्तैद रहते हैं। यह जहाज तीन बार भारत यात्रा कर चुका है–1972, 2006 तथा 2011 में।

चंद्र विजय

मनुष्य का पहला कदम, मनुष्यता की बड़ी छलाँग!
नील आर्मस्ट्रॉंग : चंद्रमा पर पहुँचने वाले पहले यात्री
19 जुलाई, 1969

हम आपको नमन करते हैं!

मंगल पांडे
ज. दिन : 19 जुलाई, 1827

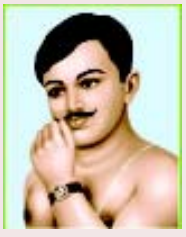

चंद्रशेखर आजाद
ज. दिन : 23 जुलाई, 1906

पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी
ज. दिन : 7 जुलाई, 1883

ने.बु.ट्र. के नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

व्हील चेयर

विनोद कुमार मिश्र पृ. 20 ₹ 11

गीता के लड़के को खेल के दौरान गंभीर चोट लग गई। डॉक्टर ने बताया कि उसे अब जीवन भर व्हील चेयर पर ही रहना पड़ेगा। गीता की सहेलियाँ हिना और कविता गीता को जानकारी देती हैं कि हाथ या पैर की विकलांगता से जीवन का अंत नहीं हो जाता। दरअसल, विज्ञान और तकनीक की प्रगति का असर व्हील चेयर पर भी पड़ा है और आज उच्च तकनीक से युक्त अनेक प्रकार के व्हील चेयर बाजार में आ गए हैं। फोल्डिंग व्हील चेयर को मोड़कर किसी बैग में भी रखा जा सकता है। सरकार की योजनाओं के अंतर्गत विकलांग व्यक्ति को काफी कम कीमत पर और कम आय वाले लोगों को मुफ्त में भी व्हील चेयर मिलते हैं। विकलांगों को खेलकूद, व्यायाम, योग आदि की उतनी ही जरूरत होती है जितनी स्वस्थ व्यक्ति को। व्हील चेयर के संबंध में इस पुस्तक में कथा शैली में अच्छी जानकारी दी गई है।

ISBN 978-81-237-6819-9

फिर मुस्काई नीतू

सुषमा दुबे पृ. 14 ₹ 12

नीतू एक प्यारी-सी लड़की है। उम्र 11-12 साल। बहुत उत्साही, बहुत हँसमुख। पढ़ाई और खेलकूद दोनों में मन लगाती। शिक्षक और घर के लोग उससे काफी खुश रहते। 5वीं के परीक्षा परिणाम में वह अव्वल आई थी। नई कक्षा में आने की उसे खुशी तो थी पर अचानक से उसका पढ़ाई और स्कूल से मन उचट गया। घर के लोग और शिक्षक परेशान। कारण किसी को समझ न आया। एक दिन उसकी कक्षा-अध्यापिका नीतू के घर आई। शिक्षिका ने नीतू से प्यार से पूछा–बता, बात क्या है? नीतू रो पड़ी। फिर रो-रोकर सब कुछ बताया। स्कूल में घंटी बजाने वाला भैया नीतू के साथ गंदी हरकतें करता था। इसी से उसका यह हाल हो गया था। सच्चाई पता चलने पर उस चपरासी को हटा दिया गया। स्कूल में बच्चियों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। नीतू के चेहरे पर फिर मुस्कान लौट आई।

ISBN 978-81-237-6820-5

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित प्रेमचंद की चुनिंदा पुस्तकें

संपादकीय टिप्पणी : महान कथाकार **प्रेमचंद** का जन्म 31 जुलाई, 1880 को हुआ था। नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्रेमचंद की कहानी और उपन्यास समेत दस से अधिक कृतियां प्रकाशित की है। यहां कुछ किताबों की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत है।

पछतावा

पृ. 24 ₹ 11

हिंदी कथा साहित्य के सम्राट माने जाने वाले मुंशी प्रेमचंद की कहानी झूठ, अन्याय और अत्याचार पर दया, धर्म और सत्य की विजय की कहानी है।

प्रेमचंद

पृ. 64 ₹ 12

सरल एवं रोचक भाषा में उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का संक्षिप्त जीवनचरित।

प्रेमचंद की तेरह बाल कहानियां

पृ. 148 ₹ 35

कथा-सम्राट प्रेमचंद की अनेक कहानियां बालोपयोगी भी हैं। इस संकलन में ऐसी तेरह कहानियों को लिया गया है, ताकि आज के बच्चे कल की साहित्यिक रचनाओं का आनंद भी ले सकें।

गबन

पृ. 112 ₹ 25

प्रेमचंद के महत्वपूर्ण उपन्यास 'गबन' का संक्षिप्त रूप।

कफन

पृ. 20 ₹ 8

अमर कथाकार मुंशी प्रेमचंद की एक यादगार कहानी।

नमक का दारोगा

पृ. 20 ₹ 9

प्रेमचंद द्वारा लिखी एक विश्वप्रसिद्ध रचना। यह रचना मानवीय मूल्यों की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करती है।

बूढ़ी काकी

पृ. 20 ₹ 9

किस प्रकार भतीजा काकी को बहला-फुसला कर जायदाद अपने नाम कर लेता है और खाने को रोटी भी नहीं देता। महान कथाकार की दिल को छू लेने वाली रचना।

बड़े घर की बेटी

पृ. 24 ₹ 10

अमर कथाकार की एक बेहतरीन रचना जो बड़े घर की बेटी का अर्थ बतलाती है।

सवा सेर गेहूं

पृ. 32 ₹ 15

इस कहानी में उच्च कोटि के साहूकार द्वारा गरीब किसान मजदूरों का शोषण दिखाया गया है। मजदूर पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपना कर्ज नहीं चुका पाते।

किताब

सुधा गुप्ता 'अमृता', कटनी, म.प्र.

गीत कहानी भरी किताब
हँसी-ठहाके भरी किताब
ज्ञान भरी जादुई किताब
संग-संग मेरे हँसी किताब
शिखर चढ़ो तुम उन्नति पथ के
हाथ पकड़ कह गई किताब

होली की रंगी पिचकारी
दीप पर्व फुलझड़ी किताब
काँटों पर चलना सिखलाती
भगती है मखमली किताब
सुख में हाथ पकड़कर चलती
दुख में है सहचरी किताब।

पुस्तकें उजियार हैं
हरती सदा अँधियार हैं
उनका ही जीवन सँवरता
अक्षर से जिनको प्यार है।
प्रो. शरद नारायण खरे, *मंडला, म.प्र.*

जो पढ़ जाता बढ़ जाता है
अनपढ़ पीछे रह जाता है
पढ़ने की ललक जगाओ
जीवन में खुशियाँ पाओ।
रूपनारायण काबरा, *जयपुर, राजस्थान*

शिक्षा की ज्योति जलाओ
जगत में प्रकाश फैलाओ।
डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष', चेन्नई, तमिलनाडु

गीत हैं ग़ज़ल हैं कविता हैं किताबें
जीवन का मधुरतम संगीत हैं किताबें।
डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे। **–बाल गंगाधर तिलक**
जन्म दिन : 23 जुलाई, 1856

पाठकीय प्रतिक्रिया

- **सा. सं.** के **मई** एवं **जून** अंक प्राप्त हुए। मई अंक में निराला जी की कविता 'तोड़ती पत्थर' से अंक का महत्व बढ़ा है, और श्रम दिवस का भी। नवसाक्षरों के पृष्ठ पर शिक्षा की जोत पूरी आभा के साथ झिलमिला रही है। जून अंक का संयोजन भी अच्छा बन पड़ा। रचनाएँ चुनी हुई और उत्तम थीं। आपके संपादन में पत्रिका अच्छी निकल रही है। मेरी कामना है कि–होता रहे प्रवाहित / निर्मल गंगा-सा / साक्षरता संवाद निरंतर / इसी मंथन से निकलेगा / ज्ञान का नवनीत / बुद्धि का अमृतघट / एक नहीं, सौ मन्वंतर। **आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.
- **सा. सं.** के हर अंक में कुछ नयापन देखने को मिल रहा है। पत्रिका पहले से ज्यादा बेहतर ढंग से निकल रही है। **मई** एवं **जून** दोनों अंक मिले, रचनाएँ खूब पसंद आईं। मैं पत्रिका को अपने मित्रों को भी पढ़ने के लिए देता हूँ।
बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर, उ.प्र.
- पत्रिका हर लिहाज से ज्ञानवर्द्धक, पुस्तकों के महत्व को दर्शाने वाली तथा साक्षरता अभियान को अग्रसर करते हुए ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करने वाली है। **जून** अंक में प्रस्तुत आलेख तथा कविताएँ अच्छी लगीं। **प्रो. शामलाल कौशल,** रोहतक, हरियाणा
- **जून** अंक मनभावन लगा। महान विभूतियों के जीवन परिचय प्रेरक व ज्ञानवर्धक थे। लघुकथा शिक्षाप्रद लगी। पूर्णिमा मित्रा की कविता प्रेरणादायक थी।
देवराज आर्यमित्र, हरिनगर, नई दिल्ली
- बहुविध रचनाओं से युक्त **सा. सं.** का **मई** अंक स्वागतयोग्य है। सभी कविताएँ पठनीय, प्रेरक और गेय लगीं और सभी आलेख स्तरीय। अंक ने मोहित कर लिया। निरक्षरता के अभिशाप से उबारने हेतु आपका अभियान सराहनीय है। **सा. सं.** बहुआयामी साक्षरता को समर्पित है, केवल अक्षर-ज्ञान तक ही नहीं।
रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान
- बहुत छोटे कलेवर में भी आप उद्देश्यपरक, रोचक तथा उपयोगी सामग्री पाठकों तक पहुँचा रहे हैं। आपका यह प्रयास सराहनीय है। **डॉ. भगवतीलाल व्यास,** उदयपुर, राजस्थान
- हमारे जीवन और घरों से निर्वासन की सजा भोगती पुस्तकों के प्रति वरिष्ठ कवि श्री वि. प्र. तिवारी जी की चिंता हमें भी सोचने के लिए विवश करती हैं। '18 मील तक किताबें-ही-किताबें' के साथ इस कविता को प्रस्तुत कर आपने पुस्तकों के प्रति विडंबनापूर्ण स्थिति की अच्छी प्रस्तुति की है। पत्रिका लघु होकर भी बड़ी पत्रिकाओं के समकक्ष है। **अनिरुद्ध प्रसाद विमल,** बाँका, बिहार
- प्रारंभिक तीन पृष्ठों में जो छोटे-छोटे आलेख होते हैं वे पर्याप्त जानकारीपरक होते हैं। नवसाक्षरों के लिए प्रस्तुत गीत-कविताएँ प्रेरक लगते हैं। **अशोक प्रियदर्शी,** राँची, झारखंड
- हमारा मानना है कि 'संसार में शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जो दुनिया को बदल सकती है।' शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य प्रत्येक शिक्षार्थी में ऊँचे सपने भरने के साथ ही उन्हें साकार करने की भी क्षमता को विकसित करना है।
डॉ. जगदीश गाँधी, लखनऊ, उ.प्र.
- जब-जब आता है साक्षरता संवाद
मन में उमगाता है आह्लाद ही आह्लाद
अधरों पर मुस्कान, आँखों में प्रकाश
नेशनल बुक ट्रस्ट को हम देते धन्यवाद!
देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़, उ.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

पुस्तक से सुधरेगा जमाना

गोपीनाथ कालभोर

पुस्तकें पढ़कर मैंने जाना
ज्ञान का इनमें होता खजाना
नई-नई सूचनाएँ मिल जातीं
सभ्यता का इनमें है खजाना।

बुद्धि उर्वर होती इनसे
जीवन भी सुंदर बन जाता
पुस्तकों से तुम नेह लगाओ
भविष्य अपना अगर सजाना।

भाग्य जागते हैं पुस्तक से
कर्म जागते हैं पुस्तक से
पुस्तकें तो सद्मार्ग सिखाती
मोती इनसे हमको पाना।

गर साक्षर को ज्ञान है पाना
नित्य नई पुस्तक घर लाना
पढ़ना और समझना भाई
नई जानकारी को पाना।

अद्भुत है पुस्तकों की दुनिया
छोटी-बड़ी पढ़ती सब मुनिया
बच्चे-बूढ़े सभी की प्यारी
पुस्तक से सुधरेगा जमाना।

खंडवा, म.प्र.

पढ़ाई जरूरी है

अशोक प्रियदर्शी

करेंगे लगन से हम हर दिन पढ़ाई
पढ़ाई ने दुनिया है बेहतर बनाई
पढ़ेंगे तभी हक हमारा मिलेगा
पढ़ेंगे तभी पेट अपना भरेगा
पढ़ेंगे किताबें तो राहें खुलेंगी
पढ़ेंगे किताबें तो आँखें खुलेंगी
ज्ञान-विज्ञान की रोजमर्रा की बातें
कि क्यों देश-दुनिया में चलती हैं बातें
कि धरती है कैसी औ' सूरज है कैसा
कि क्यों चाँद लगता है रोटी के जैसा
ये मौसम का आना, ये मौसम का जाना
ये फूलों का खिलना, ये कोयल का गाना
हवाई जहाजों का चिड़ियों-सा उड़ना
ऊपर को जाना और नीचे को मुड़ना
पढ़ेंगे तो जानेंगे ट्रेनों का चलना
कि जमता दही क्यों, बरफ का पिघलना
जानी है हम सबने अब यह सचाई
जरूरी है बढ़ने के लिए यह पढ़ाई।

राँची, झारखंड

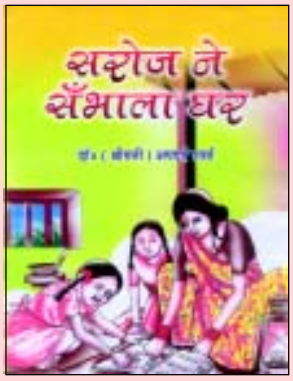

प्रस्तुत पुस्तकें रचनाकार **डॉ. अपर्णा शर्मा** की हैं। पढ़ो-बढ़ो शिक्षा से वंचित रह गए लोगों को पुनः शिक्षा की ओर प्रेरित करती कविताओं का संग्रह है। सरोज ने सँभाला घर नायिका सरोज के हिम्मत की दास्तान बयान करती कथा है। इन पुस्तकों के प्रकाशन हैं **साहित्य संगम, इलाहाबाद**। *—संपा.*

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/7/2013

बच्चे बहुत
नादान होते हैं
ईश्वर का वे
वरदान होते हैं।

प्रो. शामलाल कौशल
रोहतक, हरियाणा

अब हमसे फेसबुक पर भी मिलें :
facebook.com/nationalbooktrustindia

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का

सूची-पत्र मंगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

जिसने किताबों की दुनिया की सैर की, उसे क्या नहीं मिला! सब कुछ मिला। मानो किताबें कल्पवृक्ष हैं।

राधेलाल 'नवचक्र', भागलपुर, बिहार

एक बार आप पढ़ना सीख जाएँ, फिर आप सदा के लिए स्वाधीन हो जाते हैं।

–फ्रेडरिक डगलस

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070